11

प्रभु थारी आज महिमा जानी...

प्रभु थारी आज महिमा जानी ।।टेक.।।

अब लो मोह महा मद पिय मैं, तुमरी सुधि विसरानी।
भाग जगे तुम शांति छवी लखि, जडता नींद बिलानी ।१। प्रभु.

जगविजयी दुःखदाय रागरुष, तुम तिनकी थिति भानी।
शांतिसुधा सागर गुन आगर, परम विराग विज्ञानी ।२। प्रभु.

समवसरन अतिशय कमलाजुत, पै निर्ग्रन्थ निदानी।
क्रोध बिना दुठ मोह विदारक, त्रिभुवन पूज्य अमानी ।३। प्रभु.

एक स्वरूप सकल ज्ञेयाकृत, जग–उदास जग–ज्ञानी।
शत्रु मित्र सब में तुम सम हो, जो दुःख सुख फल यानी ।४। प्रभु.

परम ब्रह्मचारी है प्यारी, तुम हेरी शिवरानी।
है कृतकृत्य तदपि तुम शिवमग, उपदेशक अगवानी ।५। प्रभु.

भई कृपा तुमरी तुममें तैं, भक्ति सु मुक्ति निशानी।
है दयाल अब देहु 'दौल' को, जो तुमने कृति ठानी ।६। प्रभु.

हे प्रभो ! मैं आज आपकी महिमा को जान गया हूँ। अब तक मोहरूपी महामद का पान करके मैं आपके स्वरूप को भूला हुआ था, किन्तु आज मेरे भाग्य जगे हैं अर्थात् मेरा ऐसा पुण्योदय आया है जो कि मुझे आपकी शान्त मुद्रा के दर्शन हुये और जिससे मेरी अनादिकालीन जड़ता रूपी निद्रा दूर हो गई है।

हे प्रभो! आपने सारे संसार को जीत लेने वाले और महादुःख देने वाले राग-द्वेष को नष्ट कर दिया है अतः आप शान्तिरूपी अमृत के सागर हैं, गुणों के भण्डार हैं, परम वीतराग विज्ञान स्वरूप हैं।

हे प्रभो! यद्यपि समवशरण आदि अतिशय लक्ष्मी आप के संयोग में हैं, तथापि आप पूर्णतः निग्रन्थ अर्थात् अपरिग्रही हैं। आप क्रोध से रहित हैं, दुष्ट मोह के विनाशक हैं, और मान से रहित तीनों लोकों द्वारा पूज्य हैं ।

हे प्रभो! आप केवलज्ञान में सकल ज्ञेय पदार्थों को जानते हुये भी एक स्वरूप में ही रहने वाले हैं, जगत से उदासीन रहकर भी सारे जगत के ज्ञाता हैं तथा दुःख-सुख के पल में निमित्तभूत ऐसे शत्रु-मित्र आदि को समान दृष्टि से देखने वाले हैं।

हे प्रभो! आप परम ब्रमचारी हैं, फिर भी आपने अत्यन्त प्रिय मुक्तिरानी को खोजकर प्राप्त किया है तथा आप कृतकृत्य हो गये हैं, फिर भी जगत के जीवों के लिये मोक्षमार्ग के अग्रणी उपदेशक हैं।

कविवर दौलतरामजी कहते हैं कि हे प्रभो! अब आपकी कृपा से मुझमें आपके प्रति भक्ति उत्पन्न हुई है जो कि मोक्ष का उत्तम दशा प्रदान कीजिये। हे प्रभो! आप दयालु होकर मुझे भी वही उत्तम दशा दीजिये, जो आपने अपने में प्रकट की है।